रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

भारतमें अुद्योगीकरणका स्वरूप

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ३३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १५ अक्तूबर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

समान वितरण और अहिंसक समाज

रचनात्मक कार्यक्रममें मैंने तेरह अंगोंमें से अेक अंग धनका समान वितरण बताया था।

समान वितरणका सच्चा अर्थ यह है कि प्रत्येक मनुष्यको अपनी सारी कुदरती जरूरतें पूरी करनेका साधन मिल जाय, अुससे ज्यादा नहीं। अुदाहरणार्थ, यदि किसी आदमीका हाजमा कमजोर है और अुसे रोटीके लिअे पावभर आटेकी ही जरूरत है और दूसरेको आधा सेरकी जरूरत है, तो दोनोंको अपनी अपनी आवश्यकताअें पूरी करनेका मौका मिलना चाहिये।

अिस आदर्शकी स्थापनाके लिअे सारी समाज-व्यवस्थाकी फिरसे रचना करनी पड़ेगी। अहिंसाके आधार पर बने हुअे समाजका और कोअी आदर्श नहीं हो सकता। शायद हम अिस ध्येयको प्राप्त न भी कर सकें, परंतु हमें अुसे ध्यानमें रखना चाहिये और अुसके निकट पहुंचनेके लिअे सतत कार्य करते रहना चाहिये। जिस हद तक हम अपने ध्येयकी दिशामें प्रगति करेंगे, अुसी हद तक हमें सुख और संतोष प्राप्त होगा और अुतनी ही हद तक हम अहिंसक समाजकी स्थापना करनेमें मदद पहुंचायेंगे।

व्यक्तिके लिअे दूसरोंके अैसा करनेकी प्रतीक्षा किये बिना अिस प्रकारका जीवन अपना लेना पूरी तरह संभव है। और यदि आचरणके किसी खास नियमका पालन अेक व्यक्ति कर सकता है, तो अिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्तियोंका समूह भी वैसा कर सकता है। मेरे लिअे अिस हकीकत पर जोर देना जरूरी है कि कोअी सही रास्ता अख्तियार करनेके लिअे किसीको दूसरोंकी प्रतीक्षा करनेकी आवश्यकता नहीं है। लोगोंको जब अैसा लगता है कि अुद्देश्यकी सम्पूर्णतः पूर्ति नहीं हो सकती, तो वे आम तौर पर अुस दिशामें प्रारंभ करनेमें संकोच करते हैं। अिस प्रकारकी मनोवृत्तिसे सचमुच प्रगतिमें बाधा पड़ती है।

अब हम यह विचार करें कि अहिंसाके जरिये समान वितरण कैसे किया जा सकता है। अिसके लिअे पहली सीढ़ी यह है कि जिसने अिस आदर्शको अपने जीवनका अंग बना लिया है वह अपने निजी जीवनमें आवश्यक परिवर्तन कर ले। भारतकी दरिद्रताको ध्यानमें रखते हुअे वह अपनी जरूरतें कमसे कम कर लेगा। अुसकी कमाअी बेअीमानीसे मुक्त होगी। वह सट्टेकी अिच्छा छोड़ देगा। अुसका निवासस्थान नअी जीवन-पद्धतिके अनुरूप होगा। जीवनके हर क्षेत्रमें वह संयमसे काम लेगा। जब वह स्वयं अपने जीवनमें यथासंभव सब कुछ कर लेगा, तभी अुसकी अैसी स्थिति होगी कि वह अपने साथियों और पड़ोसियोंमें अिस आदर्शका प्रचार कर सके।

वास्तवमें समान वितरणके अिस सिद्धान्तकी जड़में धनवानोंके अनावश्यक धनकी संरक्षकता या ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त होना चाहिये, क्योंकि अिस सिद्धान्तके अनुसार वे अपने पड़ोसियोंसे अेक रुपया भी अधिक नहीं रख सकते। यह कैसे किया जाय? अहिंसा द्वारा? या धनवानोंसे अुनकी संपत्ति छीन कर? अैसा करनेके लिअे हमें स्वभावतः हिंसाका आसरा लेना पड़ेगा। अिस हिंसक कार्रवाअीसे समाजका लाभ नहीं हो सकता। समाज अुलटा घाटेमें रहेगा, क्योंकि अिससे समाज अेक अैसे आदमीके गुणोंसे वंचित रहेगा जो दौलत जमा करना जानता है। अिसलिअे अहिंसक मार्ग प्रत्यक्ष रूपमें श्रेष्ठ है। धनवानके पास अुसका धन रहेगा, परंतु अुसका अुतना ही भाग वह अपने काममें लेगा जितना वह अपनी निजी आवश्यकताओंके लिअे अुचित रूपमें जरूरी समझता है और बाकीको समाजके अुपयोगके लिअे धरोहर समझेगा। अिस तर्कमें यह मान लिया गया है कि संरक्षक प्रामाणिक होगा।

ज्यों ही मनुष्य अपनेको समाजका सेवक समझने लगता है, अुसकी खातिर कमाने लगता है और अुसके फायदेके लिअे खर्च करने लगता है, त्यों ही अुसकी कमाअीमें शुद्धता आ जाती है और अुसके साहसमें अहिंसाका प्रवेश हो जाता है। अिसके अतिरिक्त, यदि मनुष्योंके मन जीवनकी अिस प्रणालीकी ओर मुड़ जायं तो समाजमें अेक शान्तिपूर्ण क्रान्ति हो जायगी और वह भी बिना किसी कटुताके।

यह पूछा जा सकता है कि क्या अितिहासमें किसी भी समय मानव-स्वभावमें अैसा परिवर्तन हुआ पाया जाता है। निःसंदेह अैसे परिवर्तन व्यक्तियोंमें तो हुअे ही हैं। शायद सारे समाजमें अैसे परिवर्तन होनेका अुदाहरण न दिया जा सके। परंतु अिसका अर्थ अितना ही है कि अब तक बड़े पैमाने पर अहिंसाका कभी प्रयोग नहीं हुआ है। किसी न किसी प्रकार हम लोग अिस गलत विश्वासमें फंस गये हैं कि अहिंसा मुख्यतः व्यक्तियोंका हथियार है और अिसलिअे अुसका प्रयोग व्यक्ति तक ही सीमित रहना चाहिये। असलमें यह बात नहीं है। अहिंसा निश्चित रूपमें समाजका गुण है। अिस सचाअीका लोगोंको पक्का विश्वास करानेके लिअे मेरा प्रयत्न और प्रयोग दोनों चल रहे हैं। आश्चर्योंके अिस युगमें कोअी यह नहीं कहेगा कि नअी होनेके कारण ही कोअी वस्तु या कल्पना निकम्मी है। यह कहना भी कि कठिन होनेके कारण वह असंभव है, अिस युगकी भावनाके अनुसार नहीं है। जिन चीजोंका सपनेमें भी खयाल नहीं था वे रोज देखी जा रही हैं, असंभव सदा संभव बनता जा रहा है। हिंसाके क्षेत्रमें अिन दिनों होनेवाले विस्मयकारी आविष्कार हमें सतत आश्चर्यचकित कर रहे हैं। परंतु मैं मानता हूं कि अहिंसा क्षेत्रमें अिनसे कहीं ज्यादा अकल्पित और असंभव दिखाअी देनेवाले आविष्कार होंगे। धर्मका अितिहास अैसे अुदाहरणोंसे भरा पड़ा है।

समाजसे धर्ममात्रकी जड़ अुखाड़नेका प्रयत्न सर्वथा असंभव है। और यदि अैसा प्रयत्न सफल भी हो जाय, तो अुसका अर्थ समाजका विनाश होगा। युग-युगमें अंधविश्वास, कुरीतियां और दूसरी त्रुटियां धर्ममें घुसकर कुछ समयके लिअे अुसे बिगाड़ देती हैं। वे आती हैं और चली जाती हैं। परंतु धर्म स्वयं बना रहता है, क्योंकि विस्तृत

www.vinoba.in

अर्थमें संसारका अस्तित्व धर्म पर ही कायम है। धर्मकी अंतिम व्याख्या अीश्वरी कानूनका पालन कही जा सकती है। अीश्वर और अुसका कानून पर्यायवाची शब्द हैं। अीश्वर अर्थात् अपरिवर्तनशील, जीता-जागता कानून। वास्तवमें आज तक किसीने अुसे नहीं पाया है। परंतु अवतारों और पैगम्बरोंने अपनी तपस्याके बलसे मनुष्य जातिको अुस शाश्वत धर्मकी हल्की-सी झांकी दिखाअी है।

परंतु यदि अत्यन्त प्रयत्न करने पर भी धनवान लोग सच्चे अर्थमें गरीबोंके संरक्षक न बनें और गरीब दिन दिन अधिक कुचले जायं और भूखसे मरें, तब क्या किया जाय?

अिस पहेलीका हल ढूंढ़नेके प्रयत्नमें मुझे अहिंसक असहयोग और सविनय अवज्ञाका सही और सूचक साधन सूझा है; अमीर लोग समाजके गरीबोंके सहयोगके बिना धनसंग्रह नहीं कर सकते। मनुष्यका प्रारंभसे ही हिंसासे परिचय रहा है, क्योंकि अुसे यह बल अपने पशु-स्वभावसे अुत्तराधिकारमें मिला है। अहिंसाकी शक्तिका ज्ञान तो अुसकी आत्माको तभी हुआ, जब वह चौपायेकी स्थितिसे अूंचा अुठकर दोपाये (मनुष्य) की हालतमें पहुंचा। अिस ज्ञानका विकास अुसके भीतर धीरे धीरे, किन्तु निश्चित रूपमें हुआ है। यदि यह ज्ञान गरीबोंके भीतर प्रवेश करके फैल जाय तो वे बलवान हो जायंगे और अहिंसाके द्वारा अपनेको अुन कुचल डालनेवाली असमानताओंसे मुक्त करना सीख लेंगे, जिनके कारण वे भुखमरीके किनारे पहुंच गये हैं।

हरिजन, २५-८-'४० **गांधीजी**

दियासलाअीका गृह-अुद्योग

दियासलाअी घर-गृहस्थीके अुपयोगकी सामान्य वस्तु है और अुसका अुत्पादन गृह-अुद्योगके स्तर पर हो सकता है। यदि अुस मालको अन्य गृह-अुद्योगोंकी तरह प्रोत्साहन मिले तो वह बाजारमें अच्छी तरह बिक सकता है। परन्तु आज दियासलाअी अधिकतर बड़े कारखानोंमें बनती है। अिस परिस्थितिमें परिवर्तन करनेके लिअे ग्रामोद्योग बोर्डने दूसरी पंचवर्षीय योजनाके लिअे कुछ सुझाव पेश किये हैं। ये सुझाव अन्य गृह-अुद्योगोंके सम्बन्धमें बोर्ड द्वारा पेश किये गये सुझावोंकी तरह ध्यान देने लायक हैं।

हमारा दियासलाअीका अुद्योग तीन भागोंमें बंटा हुआ है: (१) बड़े पैमानेका, जो यंत्रोंकी मददसे चलता है; (२) मध्यम पैमानेका, जिसमें कुछ क्रियायें यंत्रोंसे और बाकीकी हाथ-अुद्योगसे होती हैं; (३) छोटे पैमानेका गृह-अुद्योगके स्तर पर चलनेवाला अुद्योग। अुत्पादन शक्तिके अनुसार अिस अुद्योगके चार वर्ग किये गये हैं — (अ) प्रतिवर्ष ५,००,००० ग्रोस बक्ससे ज्यादा अुत्पादन करनेवाला; (ब) ५,००,००० से कम और ३०,००० ग्रोससे ज्यादा अुत्पादन करनेवाला; तथा (क) ३०,००० ग्रोस तक अुत्पादन करनेवाला।

देशमें दियासलाअीका अुत्पादन बढ़ता जा रहा है। परन्तु बाजारमें हर तरफ विमको ग्रुपका ही बोलबाला है। पूंजी और व्यवस्था-शक्ति तथा माल बेचनेकी कुशलताके कारण विमको दूसरे सारे प्रतिस्पर्धियोंको बाजारसे भगा सका है। अिसके फलस्वरूप ब और क ग्रुपके बहुतसे कारखाने बन्द हो गये हैं। १९५० में ब वर्गके ११६ और क वर्गके १०८ कारखाने देशमें थे। अुनमें से १९५४ में क्रमसे ८८ और ९४ रह गये। सामान्यतः छोटी अिकाअियोंके और खास करके गृह-अुद्योगके अुत्पादनके लिअे मुख्य प्रश्न विमकोके अिजारेका मुकाबला करके बाजार प्राप्त करनेका है।

दूसरी पंचवर्षीय योजनाका मुख्य ध्येय अधिकसे अधिक लोगोंको काम देनेका होनेसे यहां पेश किये गये कार्यक्रममें नये ड वर्गके छोटे कारखाने खोलनेका विचार है। अिन कारखानोंको रोजाना अधिकसे अधिक २५ ग्रोस अुत्पादन करनेका लायसन्स दिया जायगा और प्रत्येक कारखाना ४० आदमियोंको काम दे सकेगा। अुत्पादनके बंटवारेमें ड वर्गके कारखानेका अुत्पादन रोजका १५ ग्रोस कूता गया है, क्योंकि २५ ग्रोसकी हद तक शायद ये कारखाने नहीं जा सकेंगे।

१९६०-६१ में दियासलाअीकी मांग

१९५०-५१ में दियासलाअीकी मांग २९३.३ लाख ग्रोस थी। पहली पंचवर्षीय योजनामें, पांच वर्षके अन्तमें, यह मांग बढ़कर १९५५-५६ में ३५३.० लाख तक पहुंच जायगी अैसा अनुमान था। परन्तु अनुमानके अनुसार मांग बढ़ी नहीं है। अब यह धारणा है कि दूसरी पंचवर्षीय योजनाके दौरानमें दियासलाअीकी मांग कमसे कम पहली योजनाके लक्ष्य जितनी अर्थात् ३५३ लाख ग्रोस तक बढ़ जायगी।

बंटवारा

१९५४ में कुल अुत्पादन २९३.३ लाख ग्रोस हुआ। अुसमें ९८.५ प्रतिशत अुत्पादन अ और ब वर्गके कारखानोंका था, जब कि क वर्गका अुत्पादन केवल ४३० हजार ग्रोस यानी १½ प्रतिशत था। क वर्गके कारखानोंकी संख्या घटती जाती है। और चूंकि ड वर्गके कारखानोंको ज्यादा प्रोत्साहन मिलनेवाला है, अिसलिअे संभावना यह है कि क वर्गके कारखाने ड वर्गका रूप ले लें। अिस प्रकार १९६०-६१ में मांगके कुल अन्दाज ३५३ लाख ग्रोसके बंटवारेकी कल्पना अिस प्रकार की गअी है:

अ वर्ग ब वर्ग	}	२११.८ लाख ग्रोस
क वर्ग		... ...
ड वर्ग		१४१.२ लाख ग्रोस
		३५३.० लाख

मतलब यह कि अ और ब वर्गके कारखानोंके अुत्पादनमें ६० प्रतिशतकी कमी होगी और अिस प्रकार होनेवाली कमीको पूरा करनेके लिअे ड वर्गके कारखानोंको १४१.२ लाख ग्रोस बक्स तैयार करनेका काम सौंपा जायगा।

कार्यक्रम

बोर्डने १९५५-५६ में ड वर्गके ३०० कारखाने खोलनेका विचार किया है। दूसरी पंचवर्षीय योजनामें प्रतिवर्ष रोजका १५ ग्रोस अुत्पादन करनेवाले ६०० कारखाने खोलकर पांच वर्षमें अुनकी संख्या ३,००० तक पहुंचानेका सोचा गया है। अिस प्रकार १९६०-६१ में ड वर्गके कारखानोंका वार्षिक अुत्पादन १४८ लाख ग्रोस होगा।

पूंजीकी लागत

प्रतिदिन १५ ग्रोसका अुत्पादन कर सके अैसे ड वर्गके कारखानेको शुरूमें चालू करनेके साधनोंका खर्च ६,००० रुपये कूता गया है। अिस हिसाबसे पांच वर्षमें खोले जानेवाले कुल ३,००० कारखानोंका खर्च १८० लाख रुपये होगा। अिन कारखानोंके लिअे अिस समय जकातकी रियायत अच्छी मात्रामें मिलती है, अिसलिअे बड़े कारखानोंकी तुलनामें अुनका लागत खर्च कम आयेगा और बाजारकी होड़में अुनका माल ज्यादा बिकेगा। अिसलिअे अैसा हिसाब लगाया गया है कि खानगी पेढ़ियां और/अथवा सहकारी संस्थायें अपनी पूंजीसे अिस वर्गके कारखाने खोलने लगेंगी।

अिस वर्गके कारखानोंके लिअे जो पूंजी चाहिये अुसमें से बोर्ड १,००० रुपये ग्रान्टके तौर पर और १,५०० कर्जके तौर पर देगा। अिस प्रकार ३,००० कारखानोंको दिये जानेवाले ७५ लाख रुपयोंमें से ४५ लाख रुपये वापिस मिल सकेंगे।

रोजी

यह हिसाब लगाया गया है कि अेक ग्रोस बक्स बनानेमें १.५ आदमियोंको पूरे दिनका काम मिलेगा। अिस हिसाबसे १५ ग्रोसका अुत्पादन करनेवाला कारखाना २३ आदमियोंको पूरे दिनका काम

www.vinoba.in

दे सकता है। दियासलाअी वनानेकी कुछ क्रियायें — जैसे फरमे भरना, बक्स वनाना, लेवल मारना, पेकिंग करना वगैरा — अैसी हैं, जिन्हें कारीगर घर बैठे सहायक धन्धेके तौर पर कर सकते हैं। अिसलिअे १५ ग्रोस बक्स वनानेवाले कारखानेके लिअे जरूरी २३ कारीगरोंमें से कारखानेमें तो ५ कारीगरोंसे ज्यादाकी जरूरत नहीं पड़ेगी। बाकीके कारीगर अपने घरकामके साथ यह काम कर सकेंगे। अगर यह हिसाब लगाया जाय कि वे अपना $\frac{1}{3}$ दिन अिस काममें बिताते हैं तो (१८×३) ५४ आदमियोंको $\frac{1}{3}$ दिनका काम मिलेगा। अिस हिसाबसे ३,००० कारखानोंमें १५,००० कारीगरोंको पूरे दिनका और १,६२,००० कारीगरोंको $\frac{1}{3}$ दिनका काम मिलेगा।

अिस कामकी व्यवस्थाके लिअे जरूरी तंत्र खड़ा करनेमें पांच वर्षमें ३२ लाख रुपये खर्च करनेका अंदाज लगाया गया है।

अिस कामकी तालीम देनेकी व्यवस्था पर भी विचार किया गया है। अिस सिलसिलेमें लगभग ३ लाख रुपये खर्च होनेका अन्दाज है।

अिस अुद्योगसे सम्बन्ध रखनेवाली खोजकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे २ प्रयोगशालायें खोलनेका विचार किया गया है और मालकी बिक्री तेजीसे करनेके लिअे ३६ बिक्री-केन्द्र खोलनेका सोचा गया है। अैसे बिक्री-केन्द्र खोलनेकी अिच्छा रखनेवाली सहकारी समितियोंको पूंजी लगानेके लिअे कर्ज देनेका भी विचार किया गया है। मालके विज्ञापन और प्रचार कार्यके लिअे भी व्यवस्था सोची गअी है।

अिस प्रकार सारी योजनामें पांच वर्षकी अवधिमें रु० १०१.९५ लाख रुपये पूंजी खर्च और रु० ६३.३० लाख रुपयेका चालू खर्च मिल कर रु० १६५.२५ लाखका खर्च होनेका अन्दाज लगाया गया है। घरेलू अुपयोगकी अैसी आमफहम चीजके अुत्पादनके लिअे अितना खर्च करके लगभग पौने दो लाख लोगोंको घर बैठे कम-ज्यादा मात्रामें काम मिल जाय तो यह अच्छी बात होगी।

(गुजरातीसे) वि०

तीसरे रास्तेका आन्दोलन

[निम्नलिखित आन्तरराष्ट्रीय शान्ति और स्वतंत्रताके लिअे, खासकर पश्चिमी दुनियामें, जो आन्दोलन हो रहा है अुससे सम्बन्धित अेक अखबारी संवादसे अुद्धृत किया जा रहा है। जो लोग दुनियाके सवाल सत्याग्रहके जरिये हल करनेकी बात सोचते हैं अुन्हें भिन्न प्रकारकी संस्कृति तथा राजनीतिके वातावरणमें चलनेवाले अिसी तरहके विचारों और कार्यक्रमोंकी जानकारी रखना चाहिये। निम्नलिखित यहां अुसी दृष्टिसे दिया जा रहा है।

२३-९-'५५ — म० प्र०]

दुनियामें हर जगह लाखों लोग आज यह महसूस करते हैं कि मनुष्य-जातिके लिअे शान्ति और सुरक्षा सैनिक गुटोंका निर्माण करनेकी नीतिके जरिये नहीं हासिल की जा सकती। ये लोग अपने अिस दृष्टिकोणका कोअी प्रकाशन चाहते हैं। 'तीसरे रास्ते' का आन्दोलन अुसे यह प्रकाशन प्रदान करता है।

युरोप, अमेरिका, अेशिया और अफ्रीकामें अैसे संघटन हैं जो कुछ कालसे अिस बातकी हिमायत करते आये हैं कि हमें पूर्वी या पश्चिमी, किसी भी गुटकी युद्ध-सम्बन्धी तैयारियोंका समर्थन नहीं करना चाहिये। अुन्होंने अैसे राजनीतिक और आर्थिक कार्यक्रमोंका विकास भी किया है जो पूंजीवाद और साम्यवादी सर्वसत्तावाद, दोनोंको अस्वीकार करते हैं। अिनमें से कुछ संघटन आपसमें मिलते रहे हैं और अुन्होंने, जिन बातोंमें वे सहमत हैं, अुन्हें ढूंढ़ निकाला है और अेक-दूसरेको प्रोत्साहन दिया है। अब हमारी सूचना है कि विचारोंका आदान-प्रदान तथा अधिक गहरा सम्पर्क कायम करनेके लिअे अिन संघटनोंकी अेक आन्तरराष्ट्रीय परिषद् होना चाहिये। नीचे हम अपनी नीतिका अेक आरजी निवेदन दे रहे हैं, जो कि परिषद्में होनेवाली चर्चाके लिअे आधारका काम देगा।*

परिषद् निम्नलिखित विषयोंका विचार करेगी: तीसरे रास्तेकी बुनियादी कल्पना और सत्ता-प्राप्तिके संघर्षमें भाग न लेनेके निश्चयका दुनियामें हो रही घटनाओंके प्रति विधायक दृष्टिकोणसे संबंध, पिछड़े हुअे देशोंकी सहायताके लिअे रचनात्मक योजनाका महत्त्व, अुपनिवेशोंकी स्वाधीनताका सवाल, तीसरे रास्तेके अनुरूप राजनीतिक और आर्थिक नीतिकी रूपरेखा, अिस आन्दोलनका भावी संघटन, और कार्यक्रम।

नीतिका निवेदन

"बीसवीं सदीका अुत्तरार्ध दुनियाको अेक गहरे संकटकी स्थितिसे गुजरता पा रहा है। हमारे चारों ओर प्रगतिके अवसरोंका विशाल क्षेत्र फैला हुआ है, लेकिन हम युद्ध और आर्थिक अरक्षा तथा सामाजिक और नैतिक विघटनके संकटकी छाया-तले रह रहे हैं। शस्त्र-सम्भार बढ़ रहा है, विरोध गहरे होते जा रहे हैं, अैसे युद्ध फूट पड़ते हैं जिनमें लाखों लोगोंकी प्राणहानि होती है और अन्तमें हाअिड्रोजन बमके निर्माणने तो हमारे सामने मानव-सभ्यताके ही सर्वनाशकी सम्भावना पैदा कर दी है।

"अिन कारणोंसे, और अिसलिअे कि आम तौर पर राजनीतिक पार्टियां अिस परिस्थितिके प्रतिकारके लिअे श्रद्धाके साथ कोअी कल्पनापूर्ण अुपाय पेश करनेमें असमर्थ हैं, दुनियाकी जनता असहायताकी भावना महसूस कर रही है, जो कि समाजको बंधनोंमें बांधने और सामान्य आदमीको सामाजिक नीतियों पर किसी भी तरहका नियंत्रण न रखने देनेकी मौजूदा प्रक्रियाको आसान बना रही है।

"अिस असहायताका निवारण किसी अैसे नये विकल्पके द्वारा ही किया जा सकता है जो हमें शीत-युद्धके वातावरणसे मुक्त करे और शान्तिके लिअे दृढ़ आधार पेश करे।

"अिसलिअे हम अपनेको तीसरे रास्तेके पक्षमें घोषित करते हैं।

"तीसरे रास्तेके आन्दोलनका मुख्य अुद्देश्य अुन सब लोगोंको अिकट्ठा करनेका है, जो रूसी और अमरीकी गुटोंकी वर्तमान नीतियोंको अस्वीकार करते हैं, जो जिन कारणोंसे अैसी नीतियां पैदा होती हैं अुनसे निपटनेके लिअे अेक नये राजनीतिक और दार्शनिक दृष्टिकोणकी खोज कर रहे हैं, जो शीत-युद्धमें दोनों पक्षोंमें से किसी भी पक्षकी युद्ध-संबंधी तैयारियोंका या किसी दूसरी सैनिक संधिका समर्थन नहीं करते, जो बुनियादी मानवीय अधिकारोंमें — जिनमें अेक अधिकार यह है कि सबको विदेशी शासनसे मुक्ति मिलना चाहिये — विश्वास करते हैं, जो गरीबी तथा किसी तरहके अभावके खिलाफ लड़नेके लिअे अपना जीवन लगानेकी आकांक्षा रखते हैं और जो अपने देशमें तथा बाहर हर जगह राजनीतिक तथा आर्थिक जनतंत्रके कार्यक्रमके पक्षमें हैं।"

(अंग्रेजीसे)

* यह परिषद् किंग्ज कालेज होस्टल, लन्दन, अेस० अी० - ५ में ५ सितंबर, शनिवारके प्रातःकालसे ६ सितंबर, मंगलवारकी शाम तक होनेवाली थी।

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१५ अक्तूबर १९५५

भारतमें अुद्योगीकरणका स्वरूप

पेरम्बूर, मद्रासमें रेलगाड़ियोंके डिब्बोंका निर्माण करनेवाले नये सरकारी कारखानेका अुद्घाटन करते हुअे, प्रधानमंत्रीने अिस अवसर पर देशकी अुद्योगीकरणकी नीति पर भी प्रकाश डाला। चूंकि अुस दिन गांधी-जयन्ती थी, अिसलिअे कुदरतन् अुन्होंने गांधीजी और अुनके छोटे पैमानेवाले तथा देहाती अुद्योगोंके विचारका अुल्लेख किया और अुनके साथ अुन बड़ी योजनाओंकी चर्चा की जिन्हें सरकार आजकल अपनी पंचवार्षिक योजनाओंके सिलसिलेमें कार्यान्वित कर रही है। स्वावलम्बनको हमारी औद्योगिक प्रगतिका मूल-मंत्र बतलाते हुअे अुन्होंने कहा कि "भारतके अुद्योगीकरणमें तब तक कोअी सच्ची प्रगति हुअी नहीं कही जा सकती जब तक कि हम अपने जरूरतके सारे यंत्र खुद नहीं बनाने लगते। जब तक अपने साधनोंके लिअे हमें दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है, तब तक हम परावलम्बी ही हैं।"

बेशक, वैयक्तिक और सामुदायिक जीवनमें वास्तविक स्वतंत्रताका सच्चा नियम स्वावलंबन ही है। जैसा कि हम जानते हैं, गांधीजीकी कार्य-पद्धतिका, जिसे हमारी जनताने अुनके नेतृत्वमें अपनाया था, आधार ही यह था। लेकिन गांधीजीने अुसकी हिमायत केवल राज्यके लिअे ही नहीं की थी। वे आग्रहपूर्वक कहते थे कि जनता भी सचमुच स्वतंत्र और प्रगतिशील नहीं हो सकती, यदि वह अपने जीवनकी अनिवार्य आवश्यकताओंके लिअे दूसरों पर — भले वह अुसकी अपनी ही सरकार क्यों न हो — निर्भर रहती है। अिसलिअे अुद्योगीकरणकी दिशामें भारतकी प्रगति सच्ची स्वतंत्रताके अिस बुनियादी नियमके अनुसार ही परिचालित होना चाहिये।

अिस नियमको राज्यके कारोबार पर घटित करते हुअे, जिसके लिअे प्रधानमंत्री स्वयं जिम्मेदार हैं, अुन्होंने खास तौर पर अपने सुरक्षा-संबंधी अुद्योगों और अुनकी आवश्यकताओंका जिक्र किया और कहा कि भारतके पास स्थल, जल और हवाअी — सब प्रकारकी सेनायें हो जायें लेकिन यदि अुसे अपने विकासके लिअे मशीनें बाहरसे मंगानी पड़ती हैं तो हम परतंत्र ही कहे जायंगे; अिसलिअे अपने देशमें चाहे हम दूसरी श्रेणीकी ही मशीनें क्यों न बनायें तो भी यह दूसरे देशोंसे पहली श्रेणीकी मशीनें मंगवानेकी तुलनामें ज्यादा अच्छा होगा।

स्वावलंबन और स्वतंत्रताकी सुस्पष्ट भावना पर आधारित स्वदेशी धर्मके प्रति अैसी निष्ठाका ही संदेश तो गांधीजीने हम लोगोंको दिया था। स्वराज्य अथवा राजनीतिक स्वतंत्रताके आगमनके बाद प्रधानमंत्री अुसे राज्यकी मालिकीवाले अुद्योगोंके क्षेत्रमें — जिसे सार्वजनिक क्षेत्र कहा जाता है — कार्यान्वित कर रहे हैं। असलमें तो यह सार्वजनिक नहीं, सरकारी क्षेत्र है। अुसका अुद्देश्य अेयर अिन्डिया कारपोरेशन, रेलगाड़ियां, लोहा और फौलादका अुत्पादन आदि अुद्योगोंकी संभाल करनेका है। यह तो संभव नहीं है कि सरकार जनताके खेती और गृह तथा ग्रामोद्योगों जैसी विशाल प्रवृत्तियोंको, जो हमारी घर-गृहस्थीकी वस्तुओंकी मांग पूरी करती हैं, छू सके या ले सके। ये प्रवृत्तियां ही जिसे खानगी क्षेत्र कहा जाता है अुसका निर्माण करती हैं। वे अिस अर्थमें खानगी जरूर हैं कि अुनका संचालन लोग खुद करते हैं, सरकार नहीं करती। लेकिन खानगी कहकर अुनकी अुपेक्षा करना बहुत बड़ी नादानी होगी। सच पूछो तो असली राष्ट्रीय अुद्योग, जिन पर राष्ट्रका जीवन और अुसकी प्रगति निर्भर है, ये ही हैं। जब गांधीजी अुनके महत्त्वका प्रतिपादन करते थे, तब अुनके मनमें अिस बातका यही पहलू होता था। अिस पहलूकी अुपेक्षा कदापि नहीं की जा सकती, और यह अेक शुभ चिन्ह है कि हमारे योजनाकार और हमारी सरकार अिस बातको पहिचान रही है।

अूपरसे देखने पर अैसा लगता है कि प्रधानमंत्री बड़े-बड़े कारखानों, विशाल औद्योगिक योजनाओं और अणु-शक्ति आदि पर ही मुग्ध हैं। लेकिन अगर हम अैसा खयाल करते हों कि राष्ट्रके अुद्योगीकरणके कार्यक्रममें वे खादी और ग्रामोद्योगोंके स्थानके महत्त्वसे अपरिचित हैं तो यह गलत होगा। हमें जानना चाहिये कि दूसरी पंचवार्षिक योजनामें वे अुसे स्थान देनेवाले हैं। जैसा कि अुन्होंने कहा, "अेक शक्तिशाली साम्राज्यके खिलाफ लड़ी गअी महान लड़ाअीके नेताके रूपमें, देशमें अेक विशाल आन्दोलनको चलानेके लिअे, गांधीजीने ग्रामोद्योगों पर जोर दिया। आश्चर्यकी बात है कि जो लोग अुस समय अुनके कथनमें शंका और संदेह रखते थे, वे ही आज ग्रामोद्योगोंके विकासके पक्षमें हैं।"

अिसलिअे प्रधानमंत्रीने अपने भाषणमें हमारे अुद्योगोंके सुसंबद्ध विकासकी हिमायत की। अिन अुद्योगोंकी अुन्होंने तीन श्रेणियां बनायीं — भारी किस्मके, बीचवाले और छोटे पैमानेवाले। यह खयाल रखना चाहिये कि अुद्योग खड़े करने और चलानेके लिअे जो पूंजी लगती है और जो माल चाहिये अुसके आधार पर ही यह बंटवारा किया गया है। अुनसे कितने आदमियोंको काम-धंधा प्राप्त होता है, अिस बातका विचार अिसमें नहीं है। अिसके सिवा अिस तरहके बंटवारेमें यह ध्वनि भी पायी जाती है कि तारतम्यके विचारसे पहला स्थान भारी अुद्योगोंका है और अर्थ-रचना तथा पूंजीके नियोजनका स्वरूप वे ही निर्धारित करेंगे। यह विचार साम्राज्यवादी पश्चिमकी पूंजीवादी अर्थ-रचनाकी अुपज है और अिसलिअे भारतकी अपनी विशेष परिस्थितियोंमें गलत भी हो सकता है। जैसा कि प्रधानमंत्रीने कहा, "आखिर तो हर चीजकी परीक्षा हमें मनुष्यका कल्याण करनेकी — अपने देशके करोड़ों निवासियोंका कल्याण करनेकी — अुसकी क्षमताके आधार पर करनी चाहिये।"

अिसलिअे हम अपने देशके लिअे अुद्योगीकरणका जो रूप तय करें वह अिन करोड़ों लोगों — अुनके हाथोंको और अुनके दिमागको चलानेवाला होना चाहिये। हमें अैसा कार्यक्रम चाहिये जो केवल मशीनोंको नहीं लोगोंके दिमागको गति दे। अुद्योगोंका श्रेणी-विभाजन अिस विचारके आधार पर किया जाय और हरअेक श्रेणीको अुसका अुपयुक्त महत्त्व दिया जाय तो ज्यादा अच्छा होगा। यह नया विभाजन अैसा होगा — राज्यकी मालिकीके अुद्योग जिनकी व्यवस्था वह जनताकी सेवाके लिअे करता है, पूंजीपतियों और अुद्योगपतियोंकी व्यक्तिगत मालिकीके अुद्योग जिन्हें वे अपने मुनाफेके लिअे चलाते हैं और तीसरे सामान्य प्रजाकी मालिकीके अुद्योग जिनका रूप असंख्य विकेन्द्रित अिकाअियोंका है और जिनके आधार पर ही प्रजाका सामान्य जीवन चलता है। अिन तीसरी श्रेणीके अुद्योगोंको शिल्प-कौशल, शैक्षणिक तथा आर्थिक सुविधाओं, शोध और अनुसंधान तथा अन्य अैसी चीजोंकी मदद देकर बल और प्रोत्साहन देनेकी आवश्यकता है। अभी यह सारी मदद पहली दो श्रेणियोंके ही अुद्योगोंको मिलती है। गांधीजी सामान्य मनुष्योंके नेता थे; वे सामान्य मनुष्यकी प्रतिष्ठा, आत्म-सम्मान और आजादीके पक्षमें थे और अिसलिअे अुन्होंने अुसके सादे अुद्योगोंकी आवश्यकता पर जोर दिया और अिस बातकी हिमायत की कि विज्ञान और अुद्योगोंके आर्थिक संघटनकी आधुनिक प्रणाली जो भी मदद अिन अुद्योगोंके विकासके लिअे दे सकती हो, वह सारी मदद अुन्हें दी जानी चाहिये। हम भारतमें सुसंबद्ध अुद्योगीकरणका अैसा ढांचा

www.vinoba.in

विकसित करना चाहते हैं जिसमें पैसे और यंत्रकी नहीं बल्कि मनुष्यकी प्रमुखता होगी।

४–१०–'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

अेक भविष्यवाणी

[गांधीजी १९१५ में दक्षिण अफ्रीकासे भारत लौटे थे। मद्रासके विक्टोरिया पब्लिक हॉलमें २१ अप्रैल १९१५ को — आजसे ४० बरस पहले — गांधीजी और कस्तूरबाके स्वागतके लिअे खुलेमें अेक सार्वजनिक सभा हुअी थी। डॉ० (सर) अेस० सुब्रह्मण्य अय्यर सभाके अध्यक्ष थे। अुन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषणमें नीचेकी भविष्य-वाणी की थी। अेक मित्रने वह भाषण श्री डी० वी० गुण्डप्पा द्वारा सम्पादित 'स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ डॉ० अेस० सुब्रह्मण्य अय्यर' नामक पुस्तकमें से (पृ० २९०-९१) मुझे भेजा है। अब हम जानते हैं कि डॉ० अय्यरने अुस महापुरुषके बारेमें जो भविष्यवाणी की थी वह आगे चलकर कितनी सच्ची साबित हुअी है। जब हम गांधी जयन्ती मना रहे हैं, तब अुसे पढ़ना दिलचस्प मालूम होगा।

८–१०–'५५ — म० प्र०]

आज अिस सभाका अध्यक्षपद ग्रहण करनेका अवसर देकर आपने मेरा जो सम्मान किया है, वैसा सम्मान अपने ७३ वर्षके जीवनमें मुझे कभी प्राप्त नहीं हुआ। हम यहां अेक चिरस्मरणीय अवसर पर भारतके अेक सबसे बड़े पुत्रका स्वागत और सम्मान करनेके लिअे अेकत्र हुअे हैं, जिन्होंने हमारी मातृभूमिको सारे संसारकी दृष्टिमें अूंचा अुठानेके लिअे किसी भी देशवासीसे अधिक काम किया है, जिन्होंने अन्य किसी जीवित मनुष्यसे अधिक भारत माताको अपमान और तिरस्कारकी स्थितिमें बने रहनेसे बचाया है और अुसकी सन्तानोंके लिअे कुछ मात्रामें अिज्जत और आदर प्राप्त किया है। श्री गांधीका नाम आज सारे देशमें घर-घरमें लिया जाता है। हम श्रीमती गांधीका भी हार्दिक स्वागत करते हैं, जिन्होंने अपने पतिकी कठिनाअियों, कष्टों और हारोंमें भाग लिया है और अब अुनकी जीतमें भी हिस्सा ले रही हैं। यह सब श्रीमती गांधीने अितने अुदात्त भावसे किया है कि अुन्होंने भारतीय स्त्रियोंके गौरव और प्रतिष्ठाको चार चांद लगा दिये हैं। (तालियां)

हम सब श्री गांधीके जीवनसे परिचित हैं। देशकी प्रत्येक भाषामें पवित्र और प्रभावशाली शब्दोंमें लिख कर देशमें व्यापक पैमाने पर अुनके जीवन-चरित्रको बांटना चाहिये, ताकि भारतके प्रत्येक स्त्री-पुरुष और बालकको अुसका ज्ञान हो जाय। (तालियां) लेकिन अतीत तो अुस कार्यकी केवल तैयारी मात्र है, जिसे करनेके लिअे अिन महान देशभक्तको अीश्वरने यहां भेजा है। (तालियां) ये आत्मशक्तिके अवतार हैं और अिनके जीवनमें अेक वकीलकी तीव्रता और अेक सन्तके चारित्र्यके साथ राजनीतिक व्यवहार-बुद्धिका योग हुआ है। साम्राज्यकी भौतिक शक्तियोंको भी अिस अुदात्त और पवित्र शक्तिके सामने झुकना पड़ा। मेरा विश्वास है कि यहां भी अुसी तरह श्री गांधी अपना कार्य आरंभ करेंगे और अुसे जारी रखेंगे।

भारतीय परिस्थितियोंका जाग्रत परीक्षण करनेके बाद श्री गांधीका कार्य पूरी लगन और अुत्साहसे आरंभ हो जायगा। वे विदेशी हुकूमतसे देशवासियोंकी मुक्तिके लिअे अपने ही जैसे कुछ लोग — 'संन्यासी' अपने आसपास अिकट्ठे कर लेंगे। भविष्यमें श्री गांधी यहां जो कार्य करनेवाले हैं वह गांधीके अुस कामसे सिद्ध नहीं होगा जो वे अेक राजनीतिज्ञके नाते भाषण देकर या अेक समाज-सुधारकके नाते विधवा-विवाहों और बाल-विवाहोंकी बातें कहकर करेंगे। यह कार्य नौकरशाहीके मजबूत विरोधका अन्त करनेमें अुससे कहीं ज्यादा कारगर साबित होगा, जो हमारे सैनिक युरोपमें कर रहे हैं। आजकी नौकरशाही देशके फायदेके लिअे प्राप्त की जानेवाली हर चीजके रास्तेमें आती है। वह तब तक अपना विरोध नहीं छोड़ेगी जब तक कि अूपर कही गअी 'आत्मशक्ति' का अितना विकास न हो जाय कि नौकरशाहीके लिअे विरोध जारी रखना परेशानीकी चीज बन जाय।

(अंग्रेजीसे)

शून्यवादकी लहर

अिस गांधी-जयंतीके निमित्तसे मैं अेक कॉलेजमें गया था। वहां अपने भाषणमें मैंने अनेक बातें कहीं। अुनमें अेक बात यह भी थी कि सचाअी और भलाअी या साधुता भी अेक महान् लोक-बल है। और अुसके द्वारा वैयक्तिक ही नहीं, सामुदायिक जीवनमें भी अद्भुत शक्ति प्रकट की जा सकती है। विज्ञानकी प्रचलित भाषाकी अुपमा देकर मैंने कहा कि जिस प्रकार पार्थिव जगतमें अणुशक्ति प्राप्त हुअी है, अुसी प्रकार चेतन जगतमें मनुष्यमें पाअी जानेवाली यह महा विराट् शक्ति है। वह यदि गतिमान बने तो अणुका स्फोट होने पर जिस तरह ब्रह्माण्डमें व्याप्त पंचभूतोंका प्रकृति-बल पूर्ण होकर बलसंचारकी अेक परम्परा पैदा होती है, अुसी तरह मानव-हृदयकी साधुताकी अिस शक्तिको यदि गतिमान किया जा सके तो जगतकी चेतन अथवा चित् शक्तिसे पूर्ण होकर अेक महान प्रबल आन्दोलन-शक्ति पैदा होती है। गांधीजी सत्याग्रह द्वारा अिस शक्तिका संचार करना जानते थे। अुनकी अिस कुशलताको भौतिक अणुशक्तिकी खोज करनेवाले वैज्ञानिक आअिन्स्टीनने पहचान लिया था। अुन्होंने गांधीजीके विषयमें कहा था कि भविष्यमें लोगोंको अिस बारेमें शंका होगी कि अैसा कोअी मानव सचमुच अिस पृथ्वी पर कभी हो गया है!

मेरा भाषण पूरा हो जानेके बाद अेक विद्यार्थी मुझे पहुंचानेके लिअे साथ आया था। अुसने रास्तेमें बात करते हुअे कहा, "परन्तु अिस दुनियामें यदि पैसा कमाना हो या सफलता प्राप्त करनी हो, तो सचाअी और साधुता नहीं चल सकती।" शायद अुस विद्यार्थीके जरिये आजका जमाना ही अिस तरह बोल रहा था।

मैंने अुसे समझानेका प्रयत्न किया कि असलमें देखा जाय तो संसार सचाअीसे ही चलता है। यह सच है कि कभी-कभी लाभ मिल जानेकी संभावना मालूम होती है तो हम ललचा जाते हैं और सत्यकी मददसे सामनेवालेके गले झूठ या गलत-सलत बात अुतार कर अुसे धोखा देते हैं और लाभ अुठा लेते हैं। अिसीको सामुदायिक व्यवहारमें 'शोषण' कहते हैं, जो बुरा और त्याज्य माना जाता है। अिसलिअे हमारा स्वार्थ जो सिद्ध होता मालूम होता है, वह दरअसल झूठके कारण नहीं बल्कि धोखे-बाजीके कारण संभव होता है। धोखा और छल-कपट सत्यकी मददसे और सत्यका बाना पहनकर काम करनेवाले झूठके प्रकार हैं; निरा झूठ तो चल ही नहीं सकता है, अुसका कोअी अस्तित्व ही नहीं है।

मैं नहीं जानता मेरी यह बात वह भाअी कहां तक समझ पाये, परन्तु अुनकी पूछी हुअी बात आज कॉलेज-जगतमें सामान्य हो गअी है। व्यापार-जगतमें तो वह चलती ही है। परन्तु शिक्षा-जगतमें अितनी नहीं चलती थी। आज क्या वह बढ़ रही है?

कुछ दिन पहले जवाहरलालजीने विद्यार्थियोंमें फैली हुअी मानसिक और आध्यात्मिक हवाको लक्ष्य करके कहा था कि आज विद्यार्थियोंमें जो असंयम और अुद्दण्डता देखनेमें आती है, अुसके पीछे अमुक प्रकारकी जीवन-निष्ठाका अभाव तो नहीं है?

www.vinoba.in

आज जमाना बदल रहा है। पुराने मूल्य नष्ट होने लगे हैं और नये पैदा हो रहे हैं — अुनके स्थिर होनेमें समय लगेगा। अैसे संक्रान्ति कालमें से आज हम गुजर रहे हैं। विद्यार्थी मानस पर अुसीका तो असर नहीं है?

विद्यार्थी-जगतसे आगे बढ़कर शिक्षकों और अध्यापकोंके जगत पर दृष्टि डालें, तो वहां भी जमानेका यह असर दिखाअी देता है। अक्सर अैसा नहीं कहा जा सकता कि वह वर्ग भी अपने मूल्योंमें कोअी खास निष्ठा या श्रद्धा रखकर चलता है। अिसका भी विद्यार्थियों पर असर होता है।

और आगे जाकर अर्थ-व्यवस्था तथा राजनीतिके क्षेत्रमें देखें तो वहां भी आज 'जिसकी लाठी अुसकी भैंस' की कहावत चरितार्थ हो रही है। अुसकी छाप भी शिक्षा-जगत या समाज पर पड़े बिना कैसे रह सकती है?

राजनीति, समाज-व्यवस्था, अर्थ-रचना वगैरा सामुदायिक व्यवहारके क्षेत्रोंमें भी धर्मभावना होनी चाहिये, तो ही वे क्षेत्र भलीभांति काम कर सकते हैं — अैसा कहने और सिखानेवाले गांधीजीके जानेके बाद तुरन्त यह सब देखकर कुछ लोगोंको निराशा और ग्लानि होती है तथा हीनताका अनुभव होता है। परन्तु यह तो युग-परिवर्तनके नाजुक समयमें अुठनेवाली अेक लहर है। हम धीरज रखकर निष्ठा-बुद्धिसे आगे बढ़ेंगे तो वह शान्त होकर रहेगी।

थोड़े समय पूर्व यह मननीय विचार मेरे देखनेमें आया कि यदि लोकमानसमें शून्यवाद या निष्ठाका अभाव (निहिलिज्म) पैदा हो जाय तो अुसका क्या परिणाम होता है। यह विचार यहां अन्तमें देता हूं:

> "किसी युगके पतन-कालका लक्षण बताकर अुसे 'निहिलिज्म' या शून्यवाद कहनेवाला पहला आदमी जर्मन दार्शनिक नित्शे था। शून्यवादकी अुसने यह व्याख्या की है: साधुता, न्याय और सत्य अपने स्वार्थमें निहित हैं — स्वार्थ ही साधुता, न्याय, और सत्य है, अैसा मानना ही शून्यवाद है। शून्यवादका अर्थ अैसी प्रतीति है कि अन्तमें तो (शुभ) मान्यता और विचार केवल दिखावा है; अुसके पीछे कोअी सत्यता नहीं होती। अिसलिअे सचमुच कोअी ध्यान देने जैसी या वास्तविक चीज हो तो यह देखना है कि हमारी स्वार्थसिद्धि होती है या नहीं।
>
> "शून्यवाद कोअी विचारवाद नहीं है; अुसके सम्बन्धमें न तो आप कोअी कानून बना सकते और न स्कूल-कॉलेजोंके लिअे अुसका कोअी पाठ्यक्रम तैयार कर सकते। वह तो आत्माका रोग है; अुसे वही लोग परख सकते हैं जिन्हें वह रोग हुआ नहीं है या जिनका वह रोग मिट चुका है। परन्तु अधिकतर लोगोंको वह दिखाअी नहीं देता, क्योंकि अुन्हें यही लगता है कि अैसा होना ही स्वाभाविक है — 'अैसा ही सदासे चला आया है और अैसा ही सदा चलनेवाला है।'"

आजका अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र व्यक्तिके संकुचित स्वार्थको स्वाभाविक वृत्ति मानकर ही चलता है। अिसी आधार पर आज सारे जगत और अुसके संपूर्ण क्षेत्रोंकी रचना हुअी है। अिसी कारणसे आज दुनियाके समझदार लोग अुसमें धर्म भावना जाग्रत करके मानवता, दया, न्याय, परस्पर आदर और सहकारभाव बढ़ानेका प्रयत्न कर रहे हैं। आन्तर-राष्ट्रीय क्षेत्रमें पंचशील, देशोंके राष्ट्रीय क्षेत्रमें समानता और सामाजिक न्यायके आधार पर शोषणका अन्त, साम्राज्यवादका अन्त, रंगद्वेषकी मानवद्रोही भावनाका अन्त — वगैरा विश्वव्यापी आन्दोलनोंका विचार करें तो अुनके मूलमें यही विचार है कि निष्ठुर शून्यवादका नाश करके मानव-धर्मकी निष्ठा बढ़ाअी जाय और नये संसारकी रचना की जाय।

भारतको शून्यवादसे संतोष नहीं हो सकता। यह निश्चित बात है कि अुसकी आत्माको जाग्रत किये बिना हम अपने स्वराज्यका पुनर्निर्माण नहीं कर सकेंगे। अतः अिसके अनुरूप निष्ठा प्रेरित करना राजनीतिज्ञों, समाज-व्यवस्थापकों, अर्थतंत्र चलानेवालों और शिक्षाकारों सबका काम हो जाता है। अपने-अपने क्षेत्रमें अनुरूप निष्ठासे काम करते हुअे यह चीज हम आसानीसे सिद्ध कर सकते हैं। नग्न स्वार्थ, सत्तालोभ, दंभ, धोखा और अप्रामाणिकता अैसी निष्ठाके शत्रु हैं; और 'निहिलिज्म' के वे मित्र हैं। आज राजनीति हमारे समाजका सबसे मुख्य और अत्यंत मानप्राप्त पुरुषार्थ हो गअी है। अुसमें पड़े हुअे लोगोंको समझना चाहिये कि अिस निष्ठाकी रक्षा करना अुनकी खास जिम्मेदारी है। अुन्हें अिसकी सावधानी रखनी चाहिये कि शील और सदाचारमें निष्ठा पैदा करनेका काम वे भूलेंगे तो समाज भी अुसे भूलेगा।

४-१०-'५५ **मगनभाई देसाई**

(गुजरातीसे)

पंजाबमें भाषाओंका प्रश्न

पंजाबकी राज्यभाषाके बारेमें कुछ समयसे झगड़ा चल रहा है। अुसके साथ भाषाके आधार पर अलग अेक पंजाबी राज्यकी रचनाका सवाल भी जुड़ा हुआ है। अितना ही नहीं, अुस पर साम्प्रदायिकताका भी असर है। मतलब यह कि यह सवाल वहांकी प्रजाकी मनोरचनाकी गहराअीसे पैदा हुआ है।

भाषाका कौमसे क्या सम्बन्ध, किसीके मनमें अैसा सवाल पैदा हो तो मैं कहूंगा कि अुत्तर प्रदेशमें हिन्दी और अुर्दूके बारेमें क्या अैसा ही भाव नहीं है? और यही भाव क्या संस्कृत, अरबी अित्यादि प्राचीन भाषाओंके बारेमें नहीं है?

अैसे अनेक भाव हमारी अत्यन्त प्राचीन जनताके मानसमें पड़े हुअे हैं। अपनी आंखें मूंदकर हम अुनकी अुपेक्षा नहीं कर सकते। हमें अुनका परिशोधन करना चाहिये। अपने प्राचीन राष्ट्रका जो सच्चा लोकात्मा है अुसका संशोधन करके अपने सच्चे राष्ट्र-भावका नवसर्जन करनेका समय आ पहुंचा है, यह बात अिन सारी घटनाओंसे प्रकाशकी तरह स्पष्ट हो जाती है।

पंजाबमें मुख्य दो धार्मिक समुदाय हैं — हिन्दू और सिख। सिख हिन्दुओंसे अपनेको अलग मानते हैं यद्यपि सिख धर्म हिन्दू धर्मकी ही अेक शाखा है। किन्तु अिस पंथने अितिहासके दौरानमें अपने विकासमें नया सम्प्रदाय ही नहीं, हिन्दू समाजसे अलग अपना अेक दूसरा समाज भी बना लिया है। अुसने अपनी अेक नयी लिपि — गुरुमुखी बना ली है और गुरु ग्रंथसाहिब अुसीमें लिखा और पढ़ा जाता है। दूसरी ओर पंजाबमें आर्यसमाजने भी काफी प्रभाव डाला है। शिक्षण, आचार, विचार आदि पर अुसका असर हुआ है। आर्यसमाजका धर्मग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दी भाषामें नागरी लिपिमें है।

ये दोनों प्रवाह अिस्लामके तीसरे प्रवाहके खिलाफ अमुक विरोध-भाव रखते आये हैं और साथ ही अेक-दूसरेसे भी अपनी अलगता संभालते आये हैं।

लेकिन लोगोंके जीवनकी ओर देखें तो अिस सारे प्रदेशमें अुर्दू भाषा चलती है और यह परिस्थिति आज भी कायम है। परन्तु आजके वातावरणमें यह चालू चीज रुचती नहीं, और अुसीमें से यह भाषा-युद्ध पैदा हुआ है।

पंजाबके अमुक हिस्सेमें पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि तथा अमुक दूसरे हिस्सेमें हिन्दी और नागरी लिपि चलेगी, अैसा

www.vinoba.in

वहांके मंत्रि-मंडलने सोचा है। और साथ ही यह तय किया है कि दोनों विभागोंकी शालाओंमें अेक भाषा मुख्य रहेगी और दूसरीका प्रावेशिक ज्ञान या परिचय प्राप्त करना होगा। अिस तरह दोनोंमें परिचयका साधन रहेगा, अैसा खयाल रखा गया मालूम होता है।

यह निर्णय लिया जा सका, यह भी अेक अच्छी बात हुअी, क्योंकि समस्याका कोअी हल होगा या नहीं, यही अेक सवाल हो गया था।

अिस विषय पर अभी दिल्लीमें संसदके कुछ सदस्यों तथा दूसरे लोगोंकी अेक सभा हुअी थी जिसमें अुक्त निर्णयकी टीका हुअी। श्री टण्डनजीने कहा कि "पंजाबी हिन्दीकी वैसी ही अेक बोली है जिस तरह कि अुत्तर प्रदेशकी अवधी और ब्रजभाषा तथा बिहारकी भोजपुरी है। अुसे अलग भाषा माना जाय तो भी वह केवल गुरुमुखीमें ही लिखी जाय, यह अनुचित है।" सभाकी सूचना यह थी कि सारे राज्यमें पंजाबी भाषा गुरुमुखी और नागरी दोनों लिपियोंमें लिखी जानी चाहिये। श्री टंडनजीने अैसा कहा कि बालक दो भाषाओंमें से किस भाषामें सीखें, अिस बातकी पसंदगी करनेकी मां-बापको छूट होना चाहिये। और शिक्षकोंको दोनों भाषायें जानना चाहिये।

यह सूचना अच्छी है। अुसके द्वारा ज्यादा अच्छा काम हो सकेगा और परस्पर मेल भी बढ़ेगा। लेकिन अिसी नीतिको श्री टंडनजी अुत्तर प्रदेशमें अुर्दूके बारेमें क्यों नहीं मानते, यह समझमें नहीं आता। अुर्दू भी हिन्दीकी अेक शैली है, अैसा वे कहते थे। अुसे अलग भाषा माना जाय तो भी हिन्दीके साथ दोनों लिपियां लेनेको वे तैयार नहीं हुअे और अुत्तर प्रदेशकी हिन्दीको संस्कृतमय करनेकी ओर अुन्होंने अपना जोर लगाया। पंजाबीके लिअे अुन्होंने जिस न्यायका प्रयोग किया, वैसा ही हिन्दीके लिअे किया होता, तो राष्ट्रकी आंतरभाषाका सवाल बड़ी आसानीसे हल हो सकता।

२६-९-'५५ **मगनभाई देसाई**

(गुजरातीसे)

टिप्पणियां

भद्दा और अशोभन

गोआकी सीमासे, ता० ३ अक्तूबरको भेजा हुआ, यू० पी० आअी० का (फ्री प्रेस जरनल, बम्बअी, ४ अक्तू० '५५) अेक समाचार अिस प्रकार है:

"पोर्तुगीज सरकारने आदेश जारी किया है कि स्कूलोंकी पाठ्य-पुस्तकोंमें महात्मा गांधी, भारतीय तिरंगा झंडा, तथा दूसरे राष्ट्रीय प्रतीकोंकी जो भी तसवीरें हों, वे फाड़ डाली जायं और अुन्हें जला दिया जाय।

"यह समाचार भी है कि अधिकारी लोग स्कूलोंमें जाकर विद्यार्थियोंको मराठीका अध्ययन छोड़ने और अपना समय पोर्तुगीज भाषा सीखनेमें लगानेके लिअे कह रहे हैं।"

समाचार सही हो तो कोअी आश्चर्य नहीं होगा। अगर हम औपनिवेशिक अथवा विदेशी शासकोंकी और खासकर पोर्तुगीज शासकोंकी मनोवृत्तिका विचार करें तो मालूम होगा कि अुनके लिअे अैसा करना असंभव नहीं है। दूसरी वस्तुओंकी बात जाने दें तो भी महात्मा गांधीकी तसवीरको फाड़ने और जलानेकी बात कितनी भद्दी और मूर्खतापूर्ण है। यह सारी दुनियाका अपमान है जो अुन्हें अब सत्य और अहिंसाके संदेशवाहककी तरह पूजती है। भारतीय जनताके लिअे, जो अुन्हें राष्ट्र-पिता मानती है, यह अत्यन्त क्षोभजनक है। दूसरे देशोंकी लूट करनेवाली औपनिवेशिक सत्ताओंके अिन मध्यकालीन कार्योंमें अेक घृणित अुद्धतताका भाव पाया जाता है जो आज भी अजीब ढंगसे प्रगट हो जाता है। यह अेक असभ्य भूतकालका अवशेष है जिसे अब दुनिया याद भी नहीं करना चाहती। मैं अुम्मीद करता हूं कि समाचार गलत सिद्ध होगा।

अिस बातको अेक दूसरे दृष्टिकोणसे देखें तो यह गोआ-निवासियोंके लिअे अपनी स्वतंत्रताकी भावना प्रगट करनेका अेक महत्त्वपूर्ण मौका है। केवल पशु-शक्ति पर आधारित विचारहीन विदेशी शासनकी अैसी अपमानजनक आज्ञाओंको अस्वीकार करके अुन्हें अपनी आजादी और नागरिक स्वतंत्रताकी रक्षाका आग्रह करना चाहिये। बम्बअीके गोआवालोंको अपनी अनचाही सरकारके अिस आदेशकी निंदा करनी चाहिये।

हम आशा करते हैं कि भारत-सरकार भी सरकारी तौर पर हमारी जनताके अिस स्पष्ट अपमानकी नोंध लेगी, और अिस मूर्खतापूर्ण आदेशके खिलाफ पुर्तगालको चेतावनी देगी।

५-१०-'५५ **म० प्र०**

(अंग्रेजीसे)

विनोबाकी पदयात्रा

तारीख १ अक्तूबरको अुड़ीसाकी पदयात्रा समाप्त करके श्री विनोबाजीने आन्ध्रमें प्रवेश किया है। अुड़ीसामें अुनकी पदयात्रा पिछली २६ जनवरीको शुरू हुअी थी। अिस प्रकार अुड़ीसामें विनोबाजी कुल २४८ दिन अर्थात् आठ महीने और अेक सप्ताह रहे। अिस अरसेमें अुड़ीसामें ७१२ ग्रामदान हुअे, जिनमें से ६०५ अेक ही जिलेमें अर्थात् कोरापुटमें हैं। तारीख ३० सितंबर तक अुड़ीसामें ९४,७५७ दाताओं द्वारा २,५७,२७७ अेकड़ भूमि प्राप्त हुअी है, जिसमें से १,३५,००० अेकड़से अूपर केवल कोरापुट जिलेमें करीब २२ हजार दाताओं द्वारा मिली है। अुड़ीसामें अिस समय तक कुल ३७,८२२ अेकड़ भूमि वितरित हो चुकी है।

श्री विनोबाजी अगले साढ़े तीन महीने आन्ध्रमें पदयात्रा करेंगे, अुसके बाद तेलंगाना (हैदराबाद) में प्रवेश करेंगे।

२-१०-'५५ **सिद्धराज**

'बी०सी०जी० वेक्सिनेशन : व्हाअि आअि ऑपोज अिट'

श्री राजाजीकी अिस पुस्तिकासे अिस पत्रके पाठकोंका परिचय कराया जा चुका है। 'हरिजनसेवक' के २० अगस्तके अंकमें बी० सी० जी० के बारेमें सुप्रसिद्ध डॉक्टरोंके महत्त्वपूर्ण मतोंके अिस संग्रहकी प्रस्तावना अुद्धृत की गयी थी।

लेखकने अिस संस्करणमें, जो छप रहा है और अिस सप्ताह प्रकाशित किया जायगा, पुस्तिकाका संशोधन किया है और अुसे बढ़ाया है। मिलनेका पता:—

श्री के० अेस० रामानुजन्,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग्ज,
माअुण्ट रोड,
मद्रास — २

(अंग्रेजीसे)

हमारा नया प्रकाशन

अहिंसक समाजवादकी ओर

लेखक: **गांधीजी**; संपा० **भारतन् कुमारप्पा**

गांधीजी मानते थे कि सच्चे समाजवादका लक्ष्य प्रेम और शान्ति है, अिसलिअे वह अहिंसक साधनोंसे ही प्राप्त हो सकता है। अिस पुस्तकमें अहिंसक समाजवादकी स्थापनाका आदर्श किन्तु व्यावहारिक मार्ग बतानेवाले लेखों और भाषणोंका संग्रह किया गया है। आशा है हमारी राष्ट्रीय सरकारके समाजवादी समाज-व्यवस्थाके ध्येयको मूर्त रूप देनेमें यह पुस्तक सरकार और जनता दोनोंका सही मार्गदर्शन करेगी।

कीमत २-०-० डा० खर्च ०-१२-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

शिक्षामें सुधार

[ता० २३-७-'५५ को सुनावेड़ा (कोरापुट), अुत्कल, के विद्यालयमें दिये गये प्रवचनसे।]

हिन्दुस्तानमें अंग्रेजोंके आनेके बाद समाजके बिलकुल दो टुकड़े पड़ गये हैं। अंग्रेजोंने कुछ लोगोंको अिंगलिश विद्या दी और कुछ लोगोंको कुछ भी विद्या नहीं दी। सिर्फ पांच प्रतिशत लोगोंको ही विद्या दी और बाकी सबको मूरख रखा। और वह विद्या भी अैसी दी कि जिनको विद्या मिलेगी वे दूसरे लोगोंके साथ मिल-जुलकर नहीं रह सकेंगे और शहरोंमें भाग जायेंगे। हमारे देहातोंमें अंग्रेजी विद्या कैसे चल सकती थी? अिसलिअे समाजके दो टुकड़े पड़ गये, जिनमें से अेकमें अैसे लोग हैं जो हाथसे कुछ भी काम नहीं करते हैं, सिर्फ दिमागका ही काम करते हैं; और दूसरेमें अैसे लोग हैं जो हाथसे काम करते हैं, क्योंकि अुसके बिना अुत्पादन नहीं हो सकता है। परंतु अुनका बुद्धि-विकास नहीं हो सका। फिर भी कुछ तो विकास होता ही है। जो खुली हवामें हाथसे काम करते हैं अुनकी बुद्धिका विकास होता है, अैसी भगवान्‌की योजना है। परंतु अुन्हें विद्या मिलती तो वे अपने औजारोंमें सुधार करते और अपने धंधोंमें अुन्नति करते।

अभी जो विद्या दी जा रही है अुसका स्वरूप ही अैसा है कि पढ़ना-लिखना और कुर्सी पर बैठकर हुक्म चलाना। अिसका परिणाम यह हुआ कि कुछ लोग बिलकुल ही न काम करनेवाले बन गये और कुछ लोग रात-दिन खटनेवाले हो गये। विद्या सीखनेके मानी हुअे काम छोड़ना। पढ़े-लिखे मनुष्यको काम करनेमें शर्म मालूम होने लगी। यह बिलकुल खतरनाक हालत है कि समाजमें देह और बुद्धि अलग-अलग हो। भगवान्‌ने हरअेकको हाथ भी दिये हैं और दिमाग भी दिया है। अिसलिअे हाथोंको काम भी मिलना चाहिये और दिमागके लिअे विद्या भी मिलनी चाहिये। जो विद्वान हों वे कर्म-निष्ठ भी हों और जो कर्मनिष्ठ हों वे विद्वान हों। अिस तरहसे ज्ञान और कर्म, विद्या और परिश्रम दोनों अगर जुड़ जायेंगे तो देशकी अुन्नति होगी और देश अेकरस होगा। नहीं तो देशके टुकड़े ही पड़ेंगे।

आजकी हालत अैसी है कि कुछ लोग अंधे हैं और कुछ लोग पंगु हैं। जो पंगु हैं वे चल नहीं सकते हैं परंतु देख सकते हैं और जो अंधे हैं वे देख नहीं सकते हैं परंतु चल सकते हैं। अिस तरह जब समाजमें अंध और पंगु होते हैं, तो वह ठीकसे नहीं चलता है। लेकिन समाज चलना तो चाहिये ही। अिसलिअे आज यह होता है कि पंगु अंधोंके कंधों पर बैठते हैं। बिचारा अंधा चला करता है और पंगु अूपर बैठे-बैठे दिशा बताता है। पंगु कंधे पर बैठता है अिसलिअे अंधेको लगता है कि वह बड़ा है। अुसी तरह काम करनेवाले देहातके लोगोंको लगता है कि ये शहरवाले लोग बड़े हैं, क्योंकि वे हमारे कंधों पर बैठते हैं। अिसलिअे पहली बात तो यह करनी होगी कि अिन पंगुओंको कंधों परसे अुतारना होगा और अुनसे कहना होगा कि भगवान्‌ने आपको पंगु नहीं बनाया है, आप खुद पंगु बने हुअे हैं। अिसलिअे हम आपको नीचे अुतारते हैं। तभी आप अपने पांवोंसे चल सकेंगे।

आज हम गांववाले शहरवालोंको पैसा देते हैं और अुनकी चीजें खरीदते हैं। फिर वे हमें ठगते हैं। अिसलिअे पहली बात यह करनी होगी कि गांवोंमें अुद्योग बढ़ाने होंगे और गांवकी चीजें खरीदनेका व्रत लेना होगा; यह संकल्प करना होगा कि शहरमें यंत्रोंसे बनायी हुअी चीजें हम नहीं खरीदेंगे। तब वे कंधे पर बैठे हुअे शहरवाले पंगु नीचे अुतर जायेंगे। फिर वे काम करने लग जायेंगे तो अुनके शरीरकी ताकत भी बढ़ेगी। आज तो वे हाथसे काम नहीं करते हैं अिसलिअे अुन्हें भूख नहीं लगती है। फिर भी मिठाअियां खाते हैं तो बीमार पड़ते हैं और डॉक्टरोंकी शरणमें जाते हैं। अुनकी यह अवस्था अच्छी नहीं है। अिसलिअे अुनको काम करना सीखना चाहिये। ज्ञान तो सबको मिलना चाहिये, परंतु कामके साथ-साथ ज्ञान मिलना चाहिये। कृष्ण भगवान् कितने ज्ञानी थे? अुन्होंने अुद्धवको ज्ञान दिया, अर्जुनको गीता सुनायी। लेकिन वे घोड़ोंकी, गायोंकी सेवा करते थे। गोबरसे लीपते थे, जूठी पत्तलें अुठाते थे। भगवान् कृष्णका आदर्श हमारे सामने रहना चाहिये। हम सब काम करेंगे और अुनके जैसे ज्ञानी होंगे।

यहां पर आदिवासियोंके लिअे अेक विद्यालय चल रहा है, यह जानकर मुझे खुशी होती है। यहां पर कुछ काम भी सिखाये जाते हैं, लेकिन मैं तो आपकी विद्याकी कसौटी दो बातों परसे करूंगा। पहली कसौटी यह होगी कि विद्यालयके साथ जमीन होनी चाहिये और यहां पर जितने लोग रहते हैं अुन सबको खानेके लिअे जितना अनाज चाहिये वह सब यहीं पर पैदा होना चाहिये। सिर्फ नमूनेके लिअे थोड़ीसी खेती चलती है अैसा नहीं होना चाहिये। दूसरी कसौटी यह होगी कि यहां पर जितने लड़के, शिक्षक और अुनके परिवारके लोग हैं अुन सबको अपने हाथकी कती और बुनी हुअी खादी पहननी चाहिये, अपना अनाज और अपना कपड़ा पैदा करना चाहिये। साथ-साथ तरकारी और फल भी पैदा करना चाहिये। बीमार पड़ने पर जिन दवाअियोंकी जरूरत होती है, वे भी यहांके वनस्पतिके बगीचेमें पैदा होनी चाहिये। सब लड़के रसोअीमें प्रवीण होने चाहिये। लड़के और शिक्षक दोनों मिलकर साथ-साथ काम करें अैसा होना चाहिये। अिस तरह अन्न-वस्त्रके स्वावलंबनसे मैं आपके कामकी कसौटी करूंगा।

आपकी विद्याकी कसौटी यह होगी कि यहां पर सब लड़के रामायण, गीता, भागवत और अुपनिषद् जानते हैं, प्रतिदिन ज्ञानकी चर्चा चलती है। यह सब होगा तो मैं समझूंगा कि यहां पर विद्यालय है। अभी देश भरमें भूदानका काम चल रहा है तो विद्यालयोंमें सर्वोदय विचारका अच्छा अध्ययन होना चाहिये।

विनोबा

शिक्षाकी समस्या

गांधीजी

कीमत ३-०-० डाकखर्च १-२-०

सच्ची शिक्षा

लेखक: **गांधीजी; अनु० रामनारायण चौधरी**

कीमत २-८-० डाकखर्च १-०-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४

विषय-सूची

		पृष्ठ
समान वितरण और अहिंसक समाज	गांधीजी	२५७
दियासलाअीका गृह-अुद्योग	वि०	२५८
तीसरे रास्तेका आन्दोलन		२५९
भारतमें अुद्योगीकरणका स्वरूप	मगनभाई देसाई	२६०
अेक भविष्यवाणी		२६१
शून्यवादकी लहर	मगनभाई देसाई	२६१
पंजाबमें भाषाओंका प्रश्न	मगनभाई देसाई	२६२
शिक्षामें सुधार	विनोबा	२६४
टिप्पणियां:		
भद्दा और अशोभन	म० प्र०	२६३
विनोबाकी पदयात्रा	सिद्धराज	२६३
'बी० सी० जी० वेक्सिनेशन — व्हाअि आअि ऑपोज अिट?'		२६३

www.vinoba.in